क्षमा आत्मा का स्वभाव है

पुष्पेन्द्र जैन, बाकल । क्षमा आत्मा का स्वभाव है अनादिकालीन कर्म सलुसता से यह मनुष्य की सर्वोच्च शिखर पर्याय भव पीड़ा के बीच निरंतर कष्ट प्राप्त कर रही है। यदि हमने अपनी क्षमा स्वाभावी आत्मा का एक भी बार साक्षात्कार कर लिया होता तो यह अनादिकानील परिभ्रमण का चक्कर समाप्त होकर हम शुद्ध स्वभाव को प्राप्त कर लेते । जीवन की निरंतरता में हमारे द्वारा व्यवहार एवं व्यवसाय में समझने एवं समझाने में रिश्तों को निभाने में हुई गलतियों के लिये उपस्थित सभी से क्षमा याचना की । उक्ताशय के विचार श्री दिगम्बर जैन समाज एवं श्री तारण तरण जैन समाज के संयुक्त तत्वाधान में पर्वाधिराज पर्यूषण के समापन पर उपस्थित समाज बंधुओं ने व्यक्त किये । कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रातः अभिषेक पूजन आरती तथा दोपहर में 1008 भगवान आदिनाथ जी तथा माँ जिनवाणी जी की भव्यशोभा यात्रा भव्यता एवं उल्लास के साथ बडी संख्या में धार्मिक लोगों की उपस्थिति में निकाली गई । इस अवसर पर बाजार प्रांगण में द्वार रंगोली डालकर श्रृध्दाभाव के साथ पूजन आरती एवं वंदना की गई । शोभायात्रा समारोह में जैन नवयुवक मण्डल की महिलाओं द्वारा भक्तिगीतों के साथ डांड़िया की मनमोहक प्रस्तुति दी गई ।

ढोल नगाड़ों एवं भक्ति गीतों के मध्य उत्साह के साथ नगर में भगवान आदिनाथ जी की तथा मॉ जिनवाणी की शोभा यात्रा को देखकर समाज के वयोवृद्ध ब्रम्हचारी पं. धन्यकुमार जैन, सिंघई सुरेशचंद जैन, दादा खुशालचंद पन्ना लाल जैन,प्रेमचंद जैन, संजय सिंघई श्रीमति अभिलाषा जैन, अजय अहिंसा ने बताया कि हमारे जीवन में पहली बार ऐसा अवसर आया है। जब नगर में भगवान की तथा माँ जिनवाणी की शोभायात्रा एक साथ निकाली गई । युवाओं द्वारा किये गये प्रयास की सराहना भी की । भव्यता के साथ सानंद सम्पन्न हुये इस अविस्मरणीय आयोजन में दिगम्बर जैन समाज अध्यक्ष जीवनधर मोदी, श्री तारण तरण जैन समाज अध्यक्ष .पुष्प कुमार जैन, नरेन्द्र सिंघई, पवन मोदी, पुष्पेन्द्र मोदी आदि की उपस्थित रही । भव्य समारोह में स्थानीय एवं क्षेत्रीय जनों की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रही ।

चंदेरी

चंदेरी, चक्रेश जैन । विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के मध्य बसी चंदेरी में विश्व विख्यात चौबीसी खंदारगिरी एवं पारसनाथ पुराना मंदिर एवं नया मंदिर पर भक्तों ने हर्ष उल्लासपूर्वक दशलक्षण पर्व मनाया । नित्य नियम पूजा विधान आरती के कार्यक्रम पूर्ण विधि विधान से दसों दिन भक्ति भाव पूर्ण संपन्न हुये एवं चौदस के दिन पूर्ण भक्ति भाव सहित दशलक्षण पर्व के समापन के अवसर पर भव्य जुलूस का आयोजन किया गया जिसमें समाज के सभी महिला पुरुष एवं बच्चों ने उल्लासपूर्वक सम्मिलित होकर जुलूस की शोभा को बढ़ाया । अंत में जुलूस महावीर धर्मशाला पहुंचा, वहां पर आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका प्रशांतमति माताजी ने एक विशाल धर्मसभा को संबोधित किया, जिसमें दस दिन में उपवास करने वाले भक्तों को माताजी ने आशीर्वाद दिया । सभी उपवास करने वाले भक्तों ने आशीर्वाद लेने से पहले माताजी को श्रीफल अर्पित किये इसके पश्चात माताजी ने उपवास के महत्व को बताया तदुपरांत पारसनाथ मंदिर एवं चौबीसी मंदिर से श्रीजी को लाकर अभिषेक किया गया एवं सभी धर्मप्रेमीजनों ने श्रीजी के अभिषेक को देखकर धर्मलाभ लिया ।

अगले दिन क्षमावाणी का कार्यक्रम हुआ जहां समाजजनों ने सभी से विगत वर्षों में हुये ज्ञात अज्ञात गलतियों के लिए क्षमायाचना की।

हमारी सदैव यही भावना है कि हम श्रीजी, आचार्यश्री व मुनिराजजी के फोटो प्रकाशित न करे ताकि हमारे इस माध्यम से हमारे पूज्यों की किसी भी तरह की अवमानना न हो, यदि इस प्रयास में कोई त्रुटि रह जाती है तो हम आपसे क्षमाप्रार्थी है ।

रक्षाबंधन पर्व पर बेटियों व उनके माता-पिता सम्मानित

विशाल जैन, पवा। वीर बुन्देलखण्ड की पावन भूमि पर स्थित सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी में राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागरजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद एवं वात्सल्य मूर्ति आध्यात्मिक संत मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया । चातुर्मास की बेला में मुनि श्री के पावन वर्षायोग हेतु मंगल कलश की स्थापना के बाद वीर शासन जयन्ती धूमधाम से मनायी गयी । मुनि श्री सुव्रत सागरजी महाराज ने कहा कि सच्चा भक्त संकटों से कभी दूर नही भागता, हम मुर्दा नही जिन्दा है तो संकटों से भागना कैसा? डरकर कभी मरना नही क्योंकि भगवान की भक्ति में वह शक्ति है जिससे संकट स्वत: दूर भाग जाते हैं । कस्बे के वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में श्रावण मास शुक्ल पक्ष के पखवाडे में 16 दिवसीय शांतिनाथ महामंडल विधान सम्पन्न हुआ । रक्षाबन्धन के अवसर पर सिद्ध क्षेत्र पावागिरिजी में 'बेटी बचाओ एवं बेटी पढ़ाओं' कार्यक्रम में ऐसे **66 माता-पिता को सम्मानित किया गया जिनकी केवल एक या एक से अधिक बेटियां है** । इस अवसर पर श्रेयांशनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया एवं मुनिश्री सुव्रत सागरजी महाराज द्वारा रचित रक्षाबंधन विधान में विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनिराजों को अर्घ समर्पित किये ।

'बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के अंतर्गत वक्ताओं ने कहा कि बेटी सृष्टि का मूल आधार है । दुनिया का आस्तित्व बेटी पर टिका है, बेटी है तो कल है बिना बेटी के समाज की कल्पना करना व्यर्थ है । बेटियाँ बोझ नही सहारा होती है, बेटा-बेटी के भेदभाव को दूर करना हमारा परम कर्तव्य है। बेटी मकान को घर बनाती है दो कुलों का मान बढ़ाती है। बेटी के आगमन पर भाग्य के दरवाजे खुलते है उसके बाद भी सीता और चन्दन बाला की धरती कन्याओं से सूनी होती जा रही है । यह सबसे बडी बिडम्बना है कि माँ, बहिन-बहू तो दुनिया में सभी चाहते लेकिन बेटी नही । वक्ताओं ने कहा कि भ्रूण हत्या जघन्य अपराध व महापाप हैं । सामाजिक कलंक एवं कानून में दण्डनीय है, जिसे जड से उखाड फेंकना हमारा दायित्व हैं । दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का अंत करना एवं बेटी को शिक्षित, धार्मिक एवं संस्कारित बनाना हमारा ध्येय होना चाहिए । महिला उत्पीडन रोकने एवं उनके अधिकारो की सुरक्षा के लिए न्यायोचित कदम उठाना समाज की प्राथमिकता हो । 'हम दो हमारे दो' या 'हम दो हमारा एक' की भावना बहुत बड़ी विकृति एवं समाज के लिए अभिशाप है यदि गृहस्थ जीवन में कदम रखा है तो कम से कम तीन बच्चें होना चाहिए एवं उन्हें भारतीय संस्कृति एवं जैन दर्शन के अनुसार संस्कारित करना चाहिए । अंत में मुनिश्री सुव्रत सागर जी महाराज ने ब्राहमी-सुन्दरी चारित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बेटियों को सम्मानित करनें की परम्परा प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने प्रारंभ की थी ।

मुनि श्री ने कहा कि यदि बेटी संस्कारित हो गयी तो कभी हमारा परिवार बिगड नहीं सकता है, सभी कहते हैं बेटी है तो कल है लेकिन गोदी में बेटी कोई नहीं चाहता डोली में बेटी सभी चाहते हैं । बेटी की सुरक्षा के बिना धर्म भी सुरक्षित नही है । उन्होनें बेटियों को पढने, संस्कारित रहने एवं धर्म के मार्ग पर चलने का संदेश देते हुए बेटी बचाओ- जल बचाओ का आह्वान किया । दशलक्षण महापर्व में मुनि श्री द्वारा रचित श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया एवं 9 सितम्बर को पुष्पदन्तनाथ स्वामी, 15 सितम्बर को वासुपूज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया । तथा क्षमावाणी पर्व पर सभी ने गतवर्ष में हुई भूलों के लिए एक दूसरे से क्षमा माँगी, वार्षिक कलशाभिषेक एवं फूलमाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुनि श्री ने कहा कि छः माह से अधिक द्वेषभाव रखने से सम्यक्त्व नष्ट हो जाता है अतः वर्ष में तीन बार दशलक्षण पर्व होते है उनमें हमें क्षमाभाव धारणकर सभी से द्वेष एवं बैरभाव को दूर कर देना चाहिए । उन्होनें कहा जिद, हिंसा, अहंकार, भय, निन्दा, बैर, ईर्ष्या और उपेक्षा क्रोध के संबंधी है जो हमारे जीवन को पतन की ओर ले जाते है, अतः क्रोध को जीतकर हमें क्षमा भाव धारण करना है। पावागिरी के वार्षिक मेला से पूर्व अष्टान्हिका महापर्व में 25 मण्डलीय श्री 1008 सिद्ध चक्र महामण्डल विधान के आयोजन की घोषणा की गयी, कस्बे के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पर्यूषण पर्व पर धार्मिक अनुष्ठानों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही । जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी एवं विराट प्रश्न मंच का आयोजन किया गया । दशलक्षण पर्व के समापन पर नगर में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें वीर सेवादल तालबेहट एवं जैन मिलन की महिला एवं वासुपूज्य शाखा का सक्रिय सहयोग रहा एवं रात्रि में क्षमावाणी महापर्व मनाया गया । भजन प्रतियोगिता व फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर पुरस्कार जीते । चौधरी राजीव कुमार, अनिल जैन, प्रकाशचंद्र कुड़ावनी, शैलेष कुमार, संजय मोदी, जितेन्द्र बड़ौरा, विशाल पवा ने निर्णायक की भूमिका निभायी । संचालन पूर्व पार्षद चौधरी चक्रेश जैन ने किया ।

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है । ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।